वैदिक काल में स्त्री जीवन :''एक विमर्श''

लक्ष्मी कुमारी
डेजी बनर्जी

वैदिक काल में स्त्रियाँ पुरूषों से हीन नहीं बल्कि उनकी सहगामिनी बनकर परिवार एवं समाज के संचालन में अपना योगदान देती थी जिसकी पुष्टि अनेक वैदिक सूक्तों से होती है। जैसे–ऋग्वेद के एक मंत्र में आयु की प्रथम अवस्था में विद्या प्राप्त करने वाली युवा पुत्रियों के वर्णन है। ऋग्वेद के ही एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि युवतियाँ ब्रह्मचारिणी के रूप में विद्या प्राप्त करके योग्य पति को उसी प्रकार प्राप्त करती है जैसे नदी समुद्र में मिल जाती है। यजुर्वेद में कहा गया है कि ब्रह्मचर्य व्रत को पूर्ण करके युवती कन्या का अपने योग्य शिक्षित युवा पति से विवाह होना चाहिए। यजुर्वेद के कही एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि वैदिक वाणी का उपदेश परमात्मा ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, पुरूष और नारी सबके लिए दिया था। अथर्ववेद में भी कहा गया है कि युवतियों को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके अपने योग्य युवा पति को प्राप्त करना चाहिए।